

साई साहिब स्तुति

दो० वृन्दावन नेही नृमल, रघुवर प्रेम अखण्ड ।

सन्त चरण पंकज मधुप स्वामि गरीबि श्री खण्ड ॥

सुख देवी नन्दन तू जग वन्दन । सदां जीए दासनि उर चन्दन ॥

प्रीतम प्राण आधार प्यारा । साह जा साहिब जीय जियारा ॥

सति संगति जा सर्वश साई । सुखड़ा सुहाग जा माणी सदाई ॥

भागु सुहागु अचल रहे तुंहिजो । कदहीं न दिसंदे दींहडो अहिंजो ॥

जानिब तुंहिजी जै जै गायं । देवानि द्वारे मंगल मनायां ॥

कुशल रहीं करुणा निधि कोमल । गंग नीर खां आहीं निर्मल ॥

पावन प्रेम भण्डार प्यारा । शील स्नेह सुजान सोभारा ॥

दीन दुनिया जा वाली सतिगुर । प्रणति पालक रस जा रहबर ॥

दो० सतिगुर मैगसि चंद्र जू बिनु कारण कृपाल ।

चिरु जीवो साहिब सचा दीननि बंधु दयाल ॥

दासनि वत्सल दिलबर दाता । गरीब परिवर जन पितु माता ॥

सेवक सुखद सदां हर्षाता । जीव जा जोड़ी नाथ सां नाता ॥

छलु वलु छद्रे जो शरणी आयो । करुणा सागर कण्ठ लगायो ॥

जेके दिलबर दर ते विकाणा । सहजेई सत्य सनेह समाणा ॥

खुशियुनि खजाना लाल लुटाई । गणितियूं गमिड़ा मुहब मिटाई ॥

गुरु भरींदुव सुखनि सां झोली । नाम जे नीह रंगी थव चोली ॥

अति अनूप आ महिमा तुंहिजी । अहिड़ी ऊंची आहे न कंहिजी ॥

मालिक तुंहिजी वदी वढाई । गाईनि पाण में सिय रघुराई ॥

दो० हर्ष भरिया हाकिम अबा, शरणिपाल सुखधाम ।

अति कोमल करुणा निधि, आनन्द कंद अभिराम ॥

सत्संग जो सचो वेड़िहो वसाई । भुलिया घर खां घरनि पुज़ाई ॥
वर खां विछुड़ियल वरसां मिलाई । रुअनि राम लाइ खुशियुनि खिलाई ॥
बाबल मिठिड़ा मीरपुर वारा । सहज सनेही साहिब सचारा ॥
मां तुंहिजी बान्हीं गोलियुनि गोली । आयसि भरे आशीशुनि झोली ॥
अजर अमर रहीं रस निधि राणा । सिय रघुवर जा लाल निमाणा ॥
खाणि सुखनि जी साहिब साई । रूह रिहाणि करीमि सदाई ॥
कामिल काणि कढ़ीं ना कंहिजी । प्रीतम प्रीति दिनी थव पंहिजी ॥
राम कथा जो रसु वर्षाई । गीत गुणनि जा गाई गाराई ॥

दो० जुगल चरण कमलनि मधुप, मालिक मैगसि चन्द ।

प्रेम सुधा पीओ सदां, दासनि जा दिलि बन्द ॥

सदां अवहां जो बख्त आ बाला । भिनल कृपा में नेण विशाला ॥
साई साहिब शोभा सागर । नेह में नागर रूप उजागर ॥
मालिकु मिठिड़ो जग जो वाली । सदां विराहे मुहबत माली ॥

बृज बनिड़े में घरिड़ो बणायो । साकेत नाथ खे गोदि विहायो ॥
श्री राधा राधा नामु तो गायो । गुण निधि गोविंदु गदु त घुमायो ॥
मिठिड़ा बाबल बाबल साईं । जै जै बाबल चवां सदाई ॥
महिर जा बादल महिर भण्डारा । कृपा कोमल परम उदारा ॥
लाल हिंडोले में युगल झुलाई । राम कृष्ण जी कथा बुधवाई ॥

दो० शील सिंधु शोभा सदन, कथा कल्पतरु नाथ ।
सदां जीओ साईं अमां, सिय रघुनन्दन साथ ॥

जिय जो जीवनु माणिकु मन जो । हिति हुति आहीं वसीलो जन जो ॥
जानिब तुंहिजो ज़ाणु न ज़ातुमि । केदो आहीं कीन सुजातुमि ॥
सो ज़ाणे जंहि तूं ज़ाणवाई । प्रेम सुधा जी मौज माणवाई ॥
साईं साहिब बाबल मिठिड़ा । मुल्ह महांगा सोन खां सुठिड़ा ॥
सहजि मिलिएं तदहीं कदुरु न कयडुमि । शील भरियातो कदहीं न चयडुमि ॥

जहिड़ा तहिड़ा मांदा मेरा । पंहिजा कयड़व कुमति कचेरा ॥
ओ सर्वज्ञ ओ समर्थ साई । निधर निमाणनि नींहु निबाहीं ॥
जन्म जन्म थियां चरणनि चेरी । परे न कजि जा हुब्र सां हेरी ॥

दो० जै जै मैगसि चन्द्र जू, सद् बख्शंद उदार ।
प्रेम भक्ति प्रकाश निधि सति संगति सींगार ॥